बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति द्वारा हिलाएं न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में ऊँची उड़ान असम्भव है।"

वर्ष –1 | अंक 3 | मई 2007 | मूल्य: 5 रू.

अपना शौचालय

शौचालय का महत्व

आज हमारे गावों में भी लोग अपने घरों में मनोरंजन के लिए रेडियो, टीवी, साइकिल, मोटर साइकिल, चांदी जैसी महंगी चीजों को खरीद लेते हैं। शादी–ब्याह, त्यौहार, भगोरिया, मेला या हाट–बाजार में सभी खर्च करते हैं। चाहे काम धन्धा करने वाले हो या बेकार हो, पैसे तो सभी खर्च करते हैं। कई लोग तो गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, शराब पीने के लिए जमीन तक बेच देते हैं। लेकिन जब शौचालय बनवाने की बात करते हैं तो यही सुनने में आता कि 'हमारे पास पैसे नहीं हैं', 'पैसे कहा से लाए', 'कहा से बनवाए', 'कैसे बनवाए', इसकी क्या जरूरत है? यदि सरकार बनवाती है तो बनवा लेंगे नहीं तो कोई बात नहीं। घर में शौचालय बनाने के लिए ज्यादातर लोग तैयार नहीं होते। सच यह है कि शौचालय न होने के कारण बीमारी पर हजारों रूपये खर्च कर देते हैं। लेकिन शौचालय को पूरा करने में पैसे लगाने को तैयार

बरली संस्थान में शौचालय मिस्त्री प्रशिक्षण लेते हुई

नहीं होते। अगर शौचालय बनाने का काम जैसे गड्ढे खोदना, सामान उठाकर लाना पड़े तो भी ऐसा समझते हैं कि यह तो सरकार को बनवाना है वो क्यो करे?

घर में फालतू चीजे नहीं भी होगी तो चलेगा लेकिन घर में शौचालय होना बहुत ही जरूरी है। हम सभी को अपना भला–बुरा सोचना चाहिए कि सबसे ज्यादा क्या जरूरी है, और क्यो है? इस बात को समझ लें तो सचमुच में परिवार को स्वस्थ बना सकते हैं। लेकिन हमारे देश में 100 में से केवल 20 लोग शौचालय का उपयोग करते हैं याने ज्यादातर लोग धरती पर खुली जगह जैसे खेतो, नदी, नाले, तालाब के किनारे, खोदरे, रास्ते के किनारे, घर के पिछवाड़े, रेल्वे लाइन के आसपास आदि जगहो का उपयोग शौच के लिए करते हैं। यदि हम शौचालय बनाकर उसका उपयोग करे तो अपनी धरती को भी साफ रख सकते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए शौचालय हमारे लिए एक मुख्य जरूरत बन गया है।

शौचालय से जुड़ी सोच व मान्यताएं

- कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सरकारी योजना में शौचालय बनवा तो लेते हैं परंतु उसका उपयोग नहीं करते हैं।
- कई लोगों का मानना है कि शौचालय गंदा है, घर में नहीं होना चाहिए।
- शौचालय से बदबू आती है, शौचालय को साफ करना एक जाति विशेष का काम है।
- शौचालय के अंदर चारा, कंडे, लकड़ी आदि भर देते हैं। ऐसे में शौचालय बना या नहीं बना इसका कोई फायदा नहीं होता।

सफाई जीवन में हमेशा के लिए जरूरी है। पहले हमारे आदिवासी गांव इतने साफ थे कि वहां का वातावरण स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता था। शहरों में कोई बीमार हो तो उन्हें गांव जाकर वहां के स्वच्छ वातावरण में आराम करने की सलाह दी जाती थी। परंतु आज गांव में सफाई, निर्मल ग्राम, स्वच्छ गांव जैसे अभियान चलाए जा रहे हैं क्योंकि आज गांव बीमारी का घर बन गए हैं। इन्हें बीमारी का घर हम सभी ने ही बनाया है।

सफाई का मतलब अपना शरीर या अपने घर तक की सफाई नहीं है। अपने शरीर से निकलने वाली गंदगी को सही तरीके से निपटाना भी सफाई का सबसे बड़ा हिस्सा है। हमारे पवित्र ग्रंथ, हमारा विज्ञान सभी ने इस गंदगी से निपटने के तरीके बताए। इससे होने वाले नुकसान भी बताए। इंसान हमेशा की तरह अनदेखा कर आगे बढ़ता गया। यह चिंता का विषय है कि आप और हम मिलकर किस तरह से अपनी गंदगी का निपटारा कर सकते हैं? इसी विषय को लेकर "बरली की दुनिया" आपके पास आ रही है। इसमें शौचालय का मतलब? इसकी जरूरत, बनाने का तरीका, उपयोग, फायदे व रख-रखाव आदि जानकारी शामिल है।

अपने शौचालय की जरूरत

आप सोच रहे होंगे शौचालय ही क्यों? तो सुनिए लेट्रीन, टायलेट, शौचालय, पखाना गृह उसी को कहते हैं जहां इंसान अपने आपको साफ करता है।

शौचालय मुख्य तौर पर दो प्रकार के होते हैं :-

1. सामूहिक (जो बहुत से लोगों के लिए एक जगह बनाये जाते हैं)
2. हमारा अपना शौचालय (अपने घर में या आसपास)

अपना शौचालय का मतलब है अपने घर के पास, अपने परिवार के लिए, अपने लोगों के लिये, वह छोटा सा कमरा जिसमें हम टट्टी-पेशाब करने के बाद सही तरीके से निपटारा करते हैं।

बीमारी से बचने के लिए

जब टट्टी-पेशाब की गंदगी खुले में पड़ी रहती है जिससे हमारे आसपास का वातावरण खराब होता है। मक्खी, मच्छर, जानवरों के पैरों, इंसान के द्वारा यह गंदगी हमारे खाने में पहुंच जाती है। जब बरसात होती है तो यह गंदगी बहकर नदी, तालाब, खुले कुएं, हैंडपम्प आदि में मिल जाती है और हम जब इन जगहों से पानी का उपयोग करते हैं तब हम बीमार हो जाते हैं। इससे दस्त, आमरिया, हैजा, बुखार, टायफाइड, पीलिया आदि बीमारियां आसानी से इंसान को कमजोर बनाती है। अगर हम सफाई से नहीं रहते तो इसका हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

विज्ञान ने साबित कर दिया है कि दुनिया में ज्यादातर बीमारियां गंदगी के कारण होती हैं। यदि हम गंदे हाथों से खाना खाते हैं तो हम अपने स्वास्थ्य को खतरे में डालते हैं। इससे हम बहुत सारी बीमारियों को बुलाते हैं। यदि हम आंखों पर गंदे हाथों को लगाते हैं तो हमारी आंखें दुखने लगती हैं। आज बहुत से गांवों में लोग अपने कपड़े तथा बर्तन ऐसे पानी से धोते हैं जो साफ नहीं है। कई बार तो पीने का पानी भी साफ नहीं होता है। पानी साफ नहीं होने के कारण हम बार-बार बीमार हो जाते हैं। गंदी आदतों का परिणाम गंदगी है।

महिलाओं, बीमारों, बूढ़ों व बच्चों के लिए

महिलाओं, बीमारों, बच्चों, बूढ़ों और गर्भवती महिलाओं को तुरंत शौचालय जाने की ज्यादा जरूरत होती है। महिला को शौच जाने के लिए एकांत जगह की जरूरत होती है। इसलिए वह केवल सूरज निकलने से पहले व सूरज डूबने के बाद ही टट्टी के लिए जा पाती हैं। जब उसे दस्त हो जाते हैं तो उसे बार-बार बाहर जाने में दिक्कत आती है। समय पर टट्टी के लिए ना जाने के कारण कब्ज, अपच जैसी बीमारियां हो जाती है। अंधेरे में बाहर जाने पर सांप, कीड़े-मकोड़े काटने का डर हमेशा बना रहता है।

शौचालय के उपयोग व फायदे

- ★ इसका उपयोग बच्चे, बड़े सभी को करना चाहिए।
- ★ टट्टी-पेशाब का उपयोग खाद बनाने में किया जा सकता है।
- ★ घर में शौचालय बनवाने के लिए ज्यादा जगह नहीं लगती।

- यह एक सुरक्षित, अपनी व सुविधाजनक जगह है।
- कभी भी शौच के लिए जा सकते हैं।
- बरसात के मौसम और रात के समय में बहुत ही सुविधाजनक है।
- छोटे बच्चों, बीमारों, बूढ़ों व गर्भवती महिलाओं को एकांत मिलता है।
- टट्टी–पेशाब का सही निपटारा हो जाता है।
- टट्टी–पेशाब से होने वाली बीमारियों से बचाव होता है।
- अपना शौचालय होने से सफाई रहती है।
- सूखा (शुष्क) शौचालय सबसे सस्ता है। यह करीब 1500 रु. में बन जाता है।

शौचालय का रखरखाव

- शौचालय की सफाई रोज करना चाहिए।
- इसके अंदर पत्थर, कागज, प्लास्टिक, कपड़ा, कंकड़, कीचड़, पत्ते व बाल नहीं डालना चाहिए। इससे शौचालय बंद हो जाएगा।
- शौचालय जाने के बाद अपने हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोना चाहिए।
- उपयोग से पहले व बाद में हर बार दो लीटर पानी जरूर डालें। जिससे सीट में टट्टी चिपके नहीं है।

शौचालय बनाने का तरीका

सूखा शौचालय बनाने के लिए घर के पास ही गोलाई और गहराई में दो गड्ढे खोदकर उसके चारों तरफ दीवाल की जुड़ाई एक–एक ईंट छोड़कर की जाती है जिससे

राजस्थान में शौचालय बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए प्रशिक्षणार्थी

बीच–बीच में छेद छोड़े जाते हैं। इन्हीं छेदों के द्वारा पानी सूखता है और टट्टी रह जाती है जो सूखकर, सड़कर खाद बन जाती है। जुड़ाई के बाद इस गड्ढे से थोड़ा ऊपर की ओर चौकोर चबूतरा बनाकर उस पर लेट्रीन सीट

व पैरदान फिट करते हैं। लेट्रीन सीट में लगे मुंँ से एक पाईप जोड़कर पाईप को तैयार किए गए सोखता गड्ढे में जोड़ देते हैं जिससे टट्टी गड्ढे में चली जाती है।

शौचालय की आड़ के लिए तैयार चबूतरे पर ईंट की दीवार बनाकर उसके ऊपर छत डाली जाती है। दीवार इस तरह से बनाई जाती कि पीछे से उजाला रहे और बदबू भी निकल

जाए। इसके लिए रोशनदान दीवाल या दरवाजे में बना सकते हैं जिससे शुद्ध हवा आती रहे। शौचालय बनाने के बाद दरवाजा महंगा लगाने की जरूरत नहीं होती। यह जूट, कपास की काठी, बांस, टाट से भी बना सकते हैं।

सूखा शौचालय बहुत कम खर्च में बन जाता है। इसे बनाने के लिए 2.5 मीटर x 2.5 मीटर जगह लगती है। इसको बनाने में लगभग 1500 रू. का खर्च आता है। लेकिन सरकार द्वारा 1200 रू. का योगदान दिया जाता है। बाकी खर्चा या मेहनत अपने को करना होता है। शौचालय का उपयोग परिवार के कम से कम 5 लोग करते हैं तो एक गड्ढा 3 साल तक चलता है। उसके बाद दूसरे गड्ढे का उपयोग किया जाता है। इसी दौरान एक गड्ढे में खाद तैयार हो जाती है उसे खेतों में डाल सकते हैं।

संस्थान के समाचार

बरली संस्थान की महिलाएं राजमिस्त्री बनी

अक्टूबर 2006 में 23 प्रशिक्षणार्थियों ने 10 दिन का प्रशिक्षण लिया। यह प्रशिक्षण इन्दौर के लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा दिया गया। इन्दौर संभाग के आयुक्त श्री अशोक दास की विशेष प्रेरणा तथा लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधीक्षण यंत्री श्री जी.एस. डामोर के मार्गदर्शन में यह प्रशिक्षण उन प्रशिक्षणार्थियों को दिया गया कि जब वे अपने घर, गांव में शौचालय बनवाने के लिए तैयार हो गए थे। इस प्रशिक्षण में उन्हें गड्ढा खोदने, गड्ढे के अंदर

दीवार बनाने, शौचालय की सीट लगाने व दीवार बनाकर आड़ करने तक का प्रशिक्षण लिया। गांव चाकल्या जिला धार की बीना अलावा, चम्पा अलावा, रेखा अलावा, पिंकी जमरा, सीमा जमरा, किरण अलावा, बीना जमरा, भूरखा जमरा जिन्होंने संस्थान में राजमिस्त्री के प्रशिक्षण में शौचालय बनाना सीखा था। जो सरकार द्वारा चलाए जा रहे निर्मल ग्राम योजना के सफाई अभियान में शामिल था। इस योजना के अनुसार राज्य सरकार उस व्यक्ति को 50 रूपये प्रति शौचालय देगा, जो लोगों को शौचालय बनवाने के लिए तैयार करेगा। सरकार की तरफ से शौचालय बनाने वाले राजमिस्त्री को रोज के 100 रूपये मिलेंगे और साथ ही गांव में जो परिवार शौचालय बनवाना चाहते हैं उन्हें शौचालय बनाने के लिए लोक स्वास्थ्य विभाग से 1200 रूपये मिलेंगे। प्रशिक्षण के बाद वे शौचालय बनवाने के लिए प्रयास कर रही हैं जिसका परिणाम बेहतर स्वास्थ्य होगा। जब ये लड़कियां यहां से शौचालय बनाना सीख कर गईं और उन्होंने अपने गांव में जाकर बताया तो किसी ने विश्वास ही नहीं किया।

श्रीमती जीना सोराबजी गांवों का दौरा

बरली संस्थान के निदेशक मंडल की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती जीना सोराबजी गांव गईं और उन्होंने अपने सुखद अनुभव लिखे जो इस प्रकार हैं ''संस्थान से प्रशिक्षित महिलाएं अपने गांवो में क्या कर रही हैं इसे देखने के लिए मध्यप्रदेश के धार और झाबुआ जिले के कुछ क्षेत्रों में प्रशिक्षार्थियों द्वारा चलाए जा रहे व्यवसायों को देखने का मौका मिला।

संस्थान की निदेशिका डॉ (श्रीमती) जनक पल्टा मगिलिगन के 23 वर्षों के अथक प्रयासों से यहां होने वाली गतिविधियों का निरंतर विकास होता चला गया। आज प्रशिक्षणार्थी यहां से सिलाई का प्रशिक्षण लेकर नेशनल ओपन स्कूलिंग की परीक्षा पास करती हैं, सोलर कुकर के पुर्जों को जोड़ने से लेकर उन पर खाना बनाना, सोलर ड्रायर पर फल और सब्जियां सुखाना, बाटिक प्रिंटिंग, कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग सीखती हैं। वे जैविक व केंचुओं से खाद बनाना और खेती के नए तरीके सीखती हैं। वे अब और अधिक आत्मविश्वासी बनकर अपने आप को समाज के सामने प्रस्तुत करने के योग्य हो गई हैं। अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए संस्थान को भी कई पुरस्कारों से भी नवाजा गया है। संस्थान में ज्यादातर लड़कियां ऐसी आती हैं जो निरक्षर होती हैं या थोड़ी बहुत पढ़ी लिखी होती हैं। प्रशिक्षण के अंत तक वे इतना पढ़ लिख लेती हैं कि घर पत्र लिख कर भेज सकती हैं और रिश्तेदारों को हैरानी में डाल देती हैं।

अपनी यात्रा को आगे बढ़ाते हुए हम जिम्मी और जनक के साथ इन्दौर से ढाई घंटे का सफर तय करके धार जिले के धामी गांव में पहुंचे। वहां एक आवासीय विद्यालय में बरली टीम द्वारा बनाया गया बहुत बड़ा किचन, सोलर किचन देखा जहां आदिवासी समुदाय के 200 लड़कियां रहती हैं। फिर हम दत्तीगांव के एक दूसरे छात्रावास में गए यहां पर भी श्री जिम्मी और उनकी टीम ने एक बहुत बड़ा सोलर किचन बनाया था जिसकी मदद से बच्चे सोलर तकनीक के बारे में सीखते हैं। यहां पर 450 विद्यार्थियों और कार्यकर्ताओं का खाना बनाया जाता है, जिससे गैस और लकड़ी दोनों की बचत होती है। बरली संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी सोलर ऊर्जा उपयोग करने के तरीकों के सलाहकार बन

चुके हैं। वे दूसरे संस्थाओं में भी सोलर ऊर्जा का उपयोग और सोलर उपकरणों के रखरखाव का प्रशिक्षण देते हैं।

जब हम कुक्षी पहुंचे तो वहा के अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक श्री मधुप और उनके परिवार ने संस्थान की प्रशंसा की और कहा कि यह ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के जीवन को बदलने में अहम भूमिका निभा रहा है।

फिर कुक्षी में ही पूर्व प्रशिक्षणार्थी बावजा के पति श्री जतनसिंह अचानक हमें मिले और उन्होंने हमें अपनी पत्नि

पूर्व प्रशिक्षणार्थी बावजा अपने पति श्री जतनसिंह व बच्चों के साथ

और परिवार में हो रही प्रगति देखने के लिए घर पर आमंत्रित किया। उनकी पत्नि कपड़े सिलकर पैसे कमाती है और बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। उनका एक बेटा डेली कॉलेज, इन्दौर में प्रवेश के लिए प्रयासरत है। उन्होंने श्रीमती जनक मगिलिगन से कहा कि ''आज आपकी वजह से हमारे पास सब कुछ है।'' हमें यह भी बताया कि उनकी दो बेटिया और एक बेटा समान रूप से कुक्षी के अंग्रेजी स्कूल में पढ़ रहे हैं।

'फिर हम धार के चाकल्या गांव पहुंचे। वहां की महिला सरपंच श्रीमती कुसुम अलावा जिनका सारा कामकाज उनके पति श्री रमेश अलावा करते हैं। उनसे संस्थान की निदेशिका मिली और संस्थान की प्रशिक्षित राजमिस्त्री लड़कियों को बुलाया और उन लड़कियों व सरपंच को प्रोत्साहित किया कि उनसे काम करवा कर देखें, उन्हें अवसर दें। श्री रमेश अलावा ने लड़कियों को सामने बुलाकर उनसे वायदा किया कि गांवों में शौचालय बनवाने का काम देंगे। जिसके लिए उन्हें रोज के 100 रुपये मिलते हैं। उसके बाद गांव में शौचालय बनाने का काम शुरू हुआ। लेकिन योजना जिस ढंग से बनी थी उसमें पहले लोगों को तैयार किया जाएगा, लोग निर्णय लेंगे, बनवाने के लिए आगे आएगें। यह बहुत बड़ी रूकावट रही। हालांकि 60–70 शौचालय चाकल्या पंचायत में बनाए जा चुके हैं। अभी और शौचालय बनना है। लेकिन लोगों में उत्साह की कमी के कारण कम शौचालय बने हैं। संस्थान से प्रशिक्षित

ग्राम चाकल्या में कुछ शौचालय के पास में निदेशक मंडल की सदस्या श्रीमती जीना कोरकानी, कु. बनिता जमरा, सरपंच श्रीमती कुसुम अलावा, कु. बीना जमरा व संस्थान की निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन

बीना को बीच में ही स्कूल छोड़ना पड़ा था क्योंकि उसकी फीस भरने के लिए उसके माता पिता के पास पैसे नहीं थे। अब उसे पूरी आशा है कि राजमिस्त्री के काम से उसे पैसे मिलेंगे और वह दुबारा स्कूल जा सकेगी। इसके साथ अपनी इस कुशलता को वह अपने भाई बहनों को भी सिखाएगी। प्रशिक्षित राजमिस्त्री लड़कियों को प्रोत्साहन मिले तो चाकल्या गांव स्वच्छता का उदाहरण बन सकता है।

हमने पांच–छ गांवों का दौरा किया। झाबुआ के उमराली गांव में हमने तीन–चार सिलाई की दुकानें देखी जहा हम बरली संस्थान की दो पूर्व प्रशिक्षणार्थी बरली और रोली से मिले उन्होंने कपड़े सिल कर अब तक 50,000 रुपया इकट्ठा किए हैं और अपने नाम पर जमीन भी खरीदी है। सिलाई दुकानों में हमने देखा कि अलमारियों में सिलाई के लिए बहुत सारे कपड़े रखे थे। यह देखकर हमें आश्चर्य हुआ

कांटी बेंगलाव की कु. रोली व कु. बरली चौहान अपनी सिलाई की दुकान पर

प्रशिक्षण दिया। गांव के लोग सोलर कुकर बनाएगें तो कुकर की कीमत कम होगी और लोग कुकर खरीद पाएंगे। कुकर बिगड़ जाए तो वहीं सुधार लेगें। एक माह के प्रशिक्षण में सभी ने मिलकर कुकर बनाया। इसकी विशेषता है कि इस एक कुकर पर 100 लोगों का खाना बना सकते है। कुकर को बनाने में विदेशी सामान की कोई जरूरत नहीं है।

बाहर से आने वाले सरकारी/गैरसरकारी संस्थाओं के लिए शिक्षण व प्रशिक्षण केन्द्र

सोलर ऊर्जा की जानकारी लेने के लिए एवं षोध करने के लिए संस्थाओं, स्कूलों, कॉलेजों से लगातार लोग आते हैं। जैसे मध्यप्रदेश के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की ऊर्जा एवं पर्यावरण अध्ययन शाला, आई. आई. टी. दिल्ली, आई. आई.एम. इंदौर, कस्तूरबा ट्रस्ट, बाल निकेतन, विश्वबन्धुत्व आन्दोलन संस्था, निपसिड, समाज कार्य महाविद्यालय इंदौर, डेली कॉलेज इंदौर, एम. वाय. अस्पताल, चोइथराम अस्पताल, ऋषिराज इंस्टीट्यूट टेक्नोलॉजी कॉलेज, विक्रम कानवेन्ट व देवास, उज्जैन, मन्दसौर, नीमच, रतलाम, छतरपुर, बैतूल व भोपाल से व्यक्ति आते रहते हैं और राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़ और दिल्ली से तथा देश–विदेशों से संस्थान में साल भर हजारों लोग आते रहते हैं।

संस्थान का गांवों में पर्यावरण पर प्रभाव

प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षणार्थी अपने साथ सोलर कुकर ले जाते हैं। सबसे पहले 2002 में टेमला गांव के पांच परिवार पर्यावरण दिवस पर कुकरों को अपने घर ले गए। वे घर में कुकर का उपयोग खाना पकाने, पानी गरम करने में करते हैं। इन्हें देखकर गांव के लोग भी सोलर कुकर के बारे में जानते हैं। वे अपनी बेटियों को संस्थान में प्रशिक्षण लेने के लिए भेजते हैं। संस्थान से प्रशिक्षित प्रशिक्षणार्थियों में से अभी तक 300 प्रशिक्षणार्थी अपने घर सोलर कुकर ले गए और अपने घर में खाना बनाने के लिए उपयोग कर रहे हैं।

सोलर कुकर से आमदनी, नत्थूढाना

बैतूल जिले के गांव नत्थूढाना की स्वयं सहायता समूह की 20 महिलाओं ने 2005 में संस्थान से सोलर कुकर का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के बाद सोलर कुकर पर मिठाई,

ग्राम नत्थूढाना में प्रशिक्षण के बाद सोलर कुकर पर मिठाई, नमकीन बनाकर बेचती महिलाएं

नमकीन खुरमे, सेव, चिउड़ा बनाकर बेचने का काम शुरू किया। ग्राम नत्थूढाना के स्कूल में होने वाली पालक–शिक्षक संघ की मासिक बैठकों में यहीं से नाश्ता खरीदा जा रहा है। आसपास के दूसरे गांवों के स्कूलों में भी होने वाली मासिक बैठकों में नाश्ते के लिए सामान खरीदने के लिए सम्पर्क बनाया जा रहा है। सोलर कुकर से बना सामान सावलमेण्ढा, बहिरम हाट/बाजार में भी बिकता है।

झाबुआ जिले में नारू उन्मूलन

झाबुआ जिले के 302 गांवों में गंदे पानी से होने वाले नारू रोग से पीड़ित रोगियों का इलाज के लिए सरकार द्वारा चलाए गए "नारू उन्मूलन" कार्यक्रम में महिलाओं को प्रशिक्षित किया। 1992 में रिओ डि जिनेरिओ, ब्राजील के भू सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यावरण विभाग से ''ग्लोबल– 500'' सम्मान से संस्थान को सम्मानित किया। इसके बाद संस्थान ने पर्यावरण पर काम जारी रखा जो इस प्रकार है:–

पर्यावरण जागरूकता व कुछ वास्तविक काम

संस्थान से प्रशिक्षित प्रशिक्षणार्थी सन् 1992 के बाद से हर साल अपने गांव में पर्यावरण दिवस मनाते हैं। पर्यावरण दिवस पर जानकारी जैसे हवा, पानी, जमीनी प्रदूषण से बचाव, पानी का संरक्षण, सोलर ऊर्जा का उपयोग, पौधों को लगाना, स्वयं की, गांव की सफाई, गंदे पानी से होने वाली बीमारियां, खतम होते जंगल, इंसान की समस्याएं आदि

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की सिलाई एवं कटाई की परीक्षा का परिणाम

बरली संस्थान के प्रशिक्षणार्थियो ने 27 अप्रैल 2007 को कटाई–सिलाई की सैद्धांतिक व प्रायोगिक परीक्षा दी थी। जिसके परिणाम आ गए हैं। जिसमे परीक्षा देने वाली सभी बहने उत्तीर्ण हुई हैं। संस्थान में एक महीने तक हर रोज प्रशिक्षणार्थियो की एक घंटे तक परीक्षा ली जाती रही जिससे सभी बहनो को पूछे गए प्रश्नों का जवाब, लिखने का तरीका आ गया। परीक्षा का परिणाम हम बरली की दुनिया में छाप रहे हैं। संस्थान सभी बहनो को उनकी सफलता पर बधाई भेजता है और आप सभी बहनों के सुंदर भविष्य के लिए हमेशा प्रार्थना करता है।

क्र.	नाम	शिक्षा स्तर	लिखित 30 अंक	प्रेक्टीकल 90 अंक	हाजिरी 80	कुल अंक 200	परिणाम
1.	सपना जौहरी	साक्षर	21	71	71	163	पास
2.	मीना मोरे	साक्षर	19	71	71	161	पास
3.	गायत्री वास्कले	साक्षर	15	71	71	161	पास
4.	उमा बघेरे	साक्षर	13	70	72	155	पास
5.	लीला कनोजे	साक्षर	12	70	73	155	पास
6.	संगीता डावर	साक्षर	15	70	72	157	पास
7.	मनीषा मालवीय	साक्षर	19	70	75	164	पास
8.	कमली सिसोले	साक्षर	13	70	72	155	पास
9.	सुनीता जाधव	साक्षर	12	63	76	151	पास
10.	सरस्वती मोरे	साक्षर	22	74	72	168	पास
11.	संगीता मोरे	साक्षर	21	72	73	166	पास
12.	मंजू चौहान	साक्षर	23	74	70	167	पास
13.	सुनीता जमरा	साक्षर	16	75	72	163	पास
14.	ललिता बाई	साक्षर	21	69	73	163	पास
15.	लक्ष्मी बाई	साक्षर	16	75	71	162	पास
16.	हिन्दू चौहान	साक्षर	15	65	75	155	पास
17.	प्रमिला चौहान	साक्षर	16	75	70	161	पास
18.	उर्मिला चौहान	साक्षर	18	72	72	162	पास
19.	ललिता पैसारी	आठवी	18	69	75	162	पास
20.	बीना डावर	साक्षर	23	72	75	170	पास
21.	सरिता डावर	आठवी	17	71	72	160	पास
22.	शांति जामले	आठवी	20	76	73	169	पास
23.	पूजा जामले	आठवी	22	68	74	164	पास
24.	आशा जामले	आठवी	18	73	73	164	पास
25.	संगीता चौहान	आठवी	18	69	73	160	पास
26.	भूरी वास्केल	आठवी	24	77	72	173	पास
27.	तुलसी मुछालदा	साक्षर	14	67	73	154	पास
28.	सुशीला सधाने	साक्षर	15	75	73	163	पास
29.	मंजू सधाने	साक्षर	17	72	72	161	पास
30.	कृष्णा डोडवे	साक्षर	13	67	73	153	पास
31.	सेवन्ती वास्कले	साक्षर	21	64	75	160	पास
32.	अनिता मोरे	साक्षर	22	71	73	166	पास
33.	रेखा अवास्या	साक्षर	21	63	75	159	पास
34.	कमली तोमर	साक्षर	17	71	75	163	पास
35.	सुरकी मार्य	साक्षर	24	74	73	171	पास
36.	रीना सोलंकी	साक्षर	22	70	75	167	पास
37.	रानी मकवाना	साक्षर	22	74	73	169	पास
38.	छायाबाई कोंडी	साक्षर	21	71	74	166	पास
39.	उमा चौहान	साक्षर	17	69	70	156	पास
40.	रजनी सोलंकी	साक्षर	21	76	75	172	पास
41.	लाडा बुंदेला	पांचवी	22	73	74	169	पास
42.	अनिता बुंदेला	पांचवी	17	71	71	159	पास
43.	रेखा पवाया	पांचवी	22	73	76	171	पास
44.	अरुणा बोहरे	पांचवी	22	69	73	164	पास
45.	सारिका कुशवाह	आठवी	24	71	73	168	पास
46.	राधा सोलंकी	नवमी	22	72	75	169	पास

(पेज 6 से)

"अतीत में संसार का शासन बल प्रयोग से होता था और पुरूष ने अपनी प्रबल और आक्रामक, दैहिक और मानसिक दोनों प्रकार के गुणो के कारण महिलाओ पर शासन करता था। लेकिन पासा पलट रहा है। बल प्रयोग अपना आधिपत्य खो रहा है और मानसिक स्फूर्ति, निपुणता, प्रेम और सेवा के आध्यात्मिक गुण, जिनमें महिलाओ को अधिक निपुणता प्राप्त है, वरीयता प्राप्त कर रहे हैं। नया युग वह युग होगा जिसमें महिला और पुरूष दोनों संस्कृति के तराजू में एक समान तोले जाएँगे।" वे इस बात से काफी प्रभावित है कि महिलाए पुरूषों के समान सक्षम हैं तथा महिलाए और पुरूष पक्षी के दो पंखो के समान हैं और पक्षी को ऊँची उड़ान भरने के लिए दोनो पंखो को समान रूप से मजबूत होना जरूरी हैं। ज्ञान हासिल करने के साथ उस ज्ञान का उपयोग करने की क्षमता होना भी बहुत जरूरी है और यह संस्थान के प्रशिक्षण प्रक्रिया में शामिल है। प्रशिक्षण के अंत तक वे सम्पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर लेती हैं।

जाति भेद भारतीय समाज की दूसरी बाधा है। संस्थान में भील और भिलाला को एक दूसरे के साथ मिलजुलकर रहना सिखाया जाता है जो कि उनके समाज में अच्छा नहीं माना जाता था। उनकी जातिया अलग – अलग हैं तो उन लोगो ने एक साथ बैठने और खाने से मना कर दिया। फिर भी निदेशिका दृढ़ रही और साफ–साफ लिखकर नियम बना दिये कि वे नियम का पालन नहीं करगें तो वापस जा सकते हैं। वे बिना प्रशिक्षण लिए वापस नहीं जाना चाहती थी वे यहा रही और नियमों को माना। जल्द ही बरली की प्रशिक्षिकाओ के सतत् प्रयास से उनको ये समझ में आया कि वे सभी समान रूप से ईश्वर द्वारा बनाए गए हैं और जाति के आधार पर उसने कोई भेदभाव नहीं किया है। अपने घर जाने के समय तक उन्होंने एक दूसरे से प्रेम करना सीख लिया और जाति भेदभाव को भूल गए। अब वे मानते हैं कि जाति भेदभाव जैसी बुराई को बिल्कुल भी प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। जब वे माँ बनेगी तो अपने बच्चों को इन पूर्वाग्रहो से दूर रखेगी।

गावो में शराब पीना एक अभिशाप है, पुरूष अपनी पूरी कमाई शराब में फूक देते हैं। प्रशिक्षित महिलाए वापस जाने पर अपने गावों मे नशा जैसी बुराई को रोकने मे मदद करती हैं। ये आसान काम नहीं है मगर वे जानती हैं कि उन्हे धीरज से काम लेना है। कई बार इन महिलाओ ने समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने मे भी अपना योगदान दिया। एक बार एक थानेदार निदेशिका को विशेष तौर पर मिलने आया तो उन्हें लगा कि क्या कोई समस्या लेकर आया है। थानेदार ने कहा मैं तो इन महिलाओ का आभार मानने आया हू कि इन्होंने अपने गाव के पुरूषों को नशा छुड़ाने मे मदद की है, वे बिल्कुल भी हिंसक नही हुए और उनका काम पहले से आसान हो गया है नशा के कारण होने वाली हिंसा की उनके पास कोई शिकायत नहीं आई है।

निश्चित रूप से हम स्त्री पुरूष समानता जैसे सिद्धांत को स्वीकार कर, जाति भेदभाव को दूरकर समाज मे होने वाले परिवर्तन के गवाह बनेंगे जिससे समाज मे सभी को समान दर्जा मिलेगा।

"मालवा उत्सव" में संस्थान का स्टॉल

10–14 मई 07 को "मालवा उत्सव" का आयोजन लालबाग, इन्दौर मे किया गया था। संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाई गई कलाकृतियाँ – बाटिक एवं ब्लॉक प्रिंटिंग, मोतियो से बनी चीजें, संस्थान से प्रकाशित स्वास्थ्य की पुस्तकें एवं मासिक पत्रिका बरली की दुनिया रखी गई थी। संस्थान की प्रशिक्षिका श्रीमती चंदा प्रशिक्षणार्थी कु. अमृता पाठक ने स्टॉल का संचालन किया। कलाकृतियों को लोगो ने बहुत पसंद किया था। मेला देखने एक दिन संस्थान का स्टॉफ भी गया था।

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

विशेष सूचना

प्रशिक्षण लेकर आप स्वयं के लिए, अपने परिवार और अपने गांव के लिए जो भी काम कर रहे हों, हमें जरूर लिखकर भेजें ताकि आपके समाचार "बरली की दुनिया" में छाप सकें।

संपादिका "बरली की दुनिया"
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180, भमौरी, न्यू देवास रोड,
इंदौर–452010(म.प्र.) फोन : 0731–2554066

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमौरी, न्यू देवास रोड, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 80/5 मेहरुनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन